स्वच्छ भारत

पत्तन भारती

हिन्दी गृह पत्रिका

SAGARMALA
PORT-LED PROSPERITY

कोलकाता पत्तन न्यास

सागर माला परियोजना भारत के पत्तनों को आधुनिक बनाए जाने की दिशा में भारत सरकार की एक महत्वपूर्ण और ग्राहक उन्मुख पहल है, जिससे कि पत्तन केन्द्रित विकास की गतिविधियों में वृद्धि और भारत के विकास में योगदान देने के लिए समुद्री तटों को विकसित किया जा सके। यह ''वर्तमान पत्तनों को आधुनिक विश्व स्तरीय पत्तनों में बदलने और पत्तनों, औद्योगिक समूहों तथा पृष्ठ प्रदेशों के एकीकृत विकास और सड़क, रेल, अंतर्देशीय एवं तटीय जलपथों के जरिए कुशल रिक्तिकरण प्रणाली की ओर ध्यान देती है, ताकि पत्तन तटीय क्षेत्रों में आर्थिक कार्यकलापों का संवाहक बन सके।''

SAGARMALA
PORT-LED PROSPERITY

हिंदी गृह पत्रिका
मार्च 2017

संरक्षक :
श्री एम.टी.कृष्ण बाबु, भा.प्र.सेवा
अध्यक्ष

उप संरक्षक :
श्री एस. बालाजी अरुणकुमार, आईआरटीएस
उपाध्यक्ष, कोलकाता

श्री जी. सेंथीलवेल,
उपाध्यक्ष, हल्दिया

परामर्शदाता :
श्रीमती एस. प्रधान
सचिव

दिग्दर्शक :
श्री तरुण कुमार हाजराचौधुरी,
वरिष्ठ उपसचिव

संपादक :
श्री अशोक कुमार ठाकुर, वरिष्ठ सहायक सचिव (राजभाषा)

सहयोगी :
हिन्दी कक्ष

पत्राचार:
कोलकाता पत्तन न्यास
सामान्य प्रशासन विभाग
15, स्ट्रैण्ड रोड, कोलकाता-700 001
दूरभाष: 033 2230 3451, विस्तार 340/335
ई-मेल: ashok@kolkataporttrust.gov.in

(पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के विचार लेखकों के अपने हैं, अतः यह आवश्यक नहीं कि पत्तन प्रबंधन इससे सहमत हो)

नि:शुल्क, वितरण के लिए

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
संदेश	02-07
सम्पादकीय	08
स्वागत	08
कोलकाता पत्तन : निरंतर सेवा के पथ पर	09
हल्दिया गोदी परिसर में ट्रांसलोडिंग कारोबार	10
सर्वकालिक रिकार्ड : कंटेनर यातायात के संचालन में	10
क्रूज लाइनर का पत्तन में आगमन	11
समुद्री अभिलेखागार और विरासत केंद्र	12
सूरीनाम के भारतीय गिरमिटिया	13
कादम्बिनी गंगोपाध्याय - दक्षिण एशिया की पहली महिला चिकित्सक	14
राजभाषा पुरस्कार	15
हिंदी कार्यशालाओं की झलकियां	16
कोलकाता पत्तन में हिंदी दिवस व पखवाड़ा	17
कोलकाता पत्तन न्यास में अनुवाद प्रशिक्षण	17
पुरस्कार वितरण समारोह	18
सतर्कता संबंधित कुछ अनुभव	19-20
डेंगू ज्वर के संबंध में जानकारी	21
जरा हंस लें	21
लघु कहानियाँ	22
कविताएं	23
अंग्रेजी में प्रयुक्त विदेशी अभिव्यक्तियां और उनके हिंदी पर्याय	24
कुछ अन्य गतिविधियां	25

राजीव कुमार
RAJIVE KUMAR

सत्यमेव जयते

सचिव
पोत परिवहन मंत्रालय
भारत सरकार
SECRETARY
MINISTRY OF SHIPPING
GOVERNMENT OF INDIA

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता है कि कोलकाता पत्तन न्यास द्वारा अपनी हिन्दी गृह पत्रिका 'पत्तन भारती' का पुन: प्रकाशन किया जा रहा है। यह निश्चय ही कोलकाता पत्तन परिवार के सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों के एक जुट और सकारात्मक प्रयासों का परिणाम है। मैं समझता हूँ कि हिन्दी का जितना प्रयोग किया जाएगा, उतना ही हिन्दी भाषा के प्रयोग में सरलता, सहजता आएगी और झिझक दूर होगी।

पत्रिकाएं जहां एक ओर सरकारी योजनाओं और कार्यक्रमों की जानकारी जनता तक पहुंचाकर इनकी उपयोगिता बढ़ाती हैं, वही दूसरी ओर जनता की जरूरतों और दिक्कतों की जानकारी भी देती हैं। इस जानकारी से सरकार को फैसले लेने में काफी मदद मिलती है। पत्रिका का महत्व आज भी कायम है। आज भी पत्रिका को सबसे ज्यादा भरोसेमंद माना जाता है, क्योंकि इसमें छपी बात में बदलाव नहीं हो सकता। इसके अध्ययन से पाठकों तथा सरकारी कर्मचारियों को भाषा की अच्छी जानकारी भी हो जाती है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं देते हुए मैं आशा करता हूँ कि सभी अपने दैनिक कार्यालयीन कार्यों में हिन्दी के प्रयोग करने की दिशा में निरंतर प्रयत्नशील रहेंगे।

(राजीव कुमार)

SAGARMALA
PORT-LED PROSPERITY

परिवहन भवन, 1, संसद मार्ग, नई दिल्ली–110001, भारत
टेलि.: +91 11 23714938, फैक्स : +91 11 23716656
ई–मेल : secyship@nic.in

Transport Bhawan, 1, Parliament Street, New Delhi-110001, INDIA
Tel. : +91 11 23714938, Fax : +91 11 23716656
E-mail : secyship@nic.in

पत्र सं0-11014/08/2016-रा.भा. (पत्रिका)

डॉ० बिपिन बिहारी
संयुक्त सचिव
Dr. BIPIN BEHARI
JOINT SECRETARY
Telefax : 23438130
E-mail : jsol@nic.in

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
राजभाषा विभाग
DEPARTMENT OF OFFICIAL LANGUAGE
गृह मंत्रालय
MINISTRY OF HOME AFFAIRS
चतुर्थ तल, एन.डी.सी.सी-II भवन,
4th FLOOR, N.D.C.C.-II BHAWAN,
जय सिंह रोड, नई दिल्ली-110001
JAI SINGH ROAD, NEW DELHI-110001

दिनांक 24 अप्रैल, 2017

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि कोलकाता पत्तन न्यास, कोलकाता द्वारा हिंदी गृह पत्रिका 'पत्तन भारती' का प्रकाशन किया जा रहा है ।

हिंदी देश की राजभाषा है और हम सभी का संवैधानिक दायित्व है कि हम अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करें । हिंदी भाषा की बढ़ती लोकप्रियता इस बात का सशक्त प्रमाण है कि हिंदी भाषा आम जन के हृदय को स्पर्श करती है ।

राजभाषा के कार्यान्वयन की दृष्टि से गृह पत्रिकाओं का प्रकाशन महत्वपूर्ण कार्य है, इससे अधिकारियों और कर्मचारियों को अपनी सृजनात्मक अभिव्यक्ति का सुअवसर मिलता है और वे मूल रूप में हिंदी में काम करने की ओर प्रेरित होते हैं।

मैं आशा करता हूँ कि कोलकाता पत्तन न्यास, कोलकाता द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'पत्तन भारती' अपने उद्देश्य में सफल होगी ।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

(डॉ0 बिपिन बिहारी)

संदेश

प्रिय साथियो,

मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि कोलकाता पत्तन न्यास अपने अन्य दायित्वों के साथ-साथ राजभाषा के कार्यान्वयन के लिए सदा प्रयत्नशील है। इसी कड़ी में ''पत्तन भारती'' के पुन: प्रकाशन के सुअवसर पर मैं आप सब को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

मेरा मानना है कि भाषा का जितना प्रयोग किया जाएगा उतना ही इसे सीख पाना और प्रयोग करना संभव हो सकेगा, इसलिए सभी कार्मिकों से अनुरोध है कि प्रयोग में होने वाली अशुद्धियों की ओर गौर न कर अपने सरकारी काम-काज में हिंदी का प्रयोग निर्बाध रूप से बढ़ावें।

मेरा विश्वास है कि यह एक आदर्श, उपयोगी और सूचना-प्रद पत्रिका होगी। यह सामयिक विषयों के साथ-साथ पत्तन संबंधित गतिविधियों और उपलब्धियों का प्रचार-प्रसार कर पत्तन के विकास में भी योगदान देगी।

मैं पत्रिका के प्रकाशन में शामिल सभी रचनाकारों, सम्पादक-मंडल के सभी सदस्यों तथा साथी कार्मिकों को हार्दिक बधाई देता हूं।

कृष्णबाबु

(एम.टी. कृष्णबाबु भा.प्र. सेवा)
अध्यक्ष

SAGARMALA
PORT-LED PROSPERITY

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि केओपीटी की हिन्दी गृह पत्रिका का पुन: प्रकाशन किया जा रहा है। यह एक सुखद अनुभव है। केओपीटी राजभाषा के कार्यान्वयन के लिए सर्वदा प्रयत्नशील है।

आशा है कि इसमें प्रकाशित विभिन्न रचनाएँ अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए अत्यंत ज्ञानवर्धक और उपयोगी सिद्ध होगी।

(एस. बालाजी अरुणकुमार)
उपाध्यक्ष-केडीएस

SAGARMALA
PORT-LED PROSPERITY

सुनील कुमार
SUNIL KUMAR

सत्यमेव जयते

पोत परिवहन मंत्रालय
भारत सरकार
MINISTRY OF SHIPPING
GOVERNMENT OF INDIA

संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि कोलकाता पत्तन न्यास अपनी हिन्दी गृह पत्रिका 'पत्तन भारती' का पुन: प्रकाशन कर रहा है।

आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के प्रयोग और प्रसार में वृद्धि करने के साथ-साथ कोलकाता पत्तन के कर्मचारियों की साहित्यिक क्षमताओं को अभिव्यक्त करेगी एवं उनमें पठन-पाठन की प्रवृत्ति बढ़ेगी। आशा करता हूं कि प्रकाशित सामग्री अत्यंत ज्ञानवर्धक, उपयोगी एवं दिलचस्प सिद्ध होगी।

पत्रिका के प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई। इस पत्रिका का प्रकाशन भविष्य में नियमित रूप से होता रहे और इसका प्रत्येक अंक अपनी सामग्री के कारण और संग्रहणीय सिद्ध हो यही मेरी कामना है। इस अवसर पर मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

(सुनील कुमार)
संयुक्त निदेशक (राजभाषा)

SAGARMALA
PORT-LED PROSPERITY

परिवहन भवन, 1, संसद मार्ग, नई दिल्ली–110001, भारत
Transport Bhawan, 1, Parliament Street, New Delhi-110001, INDIA

संदेश

मुझे हार्दिक प्रसन्नता है कि कोलकाता पत्तन न्यास द्वारा प्रकाशित की जाने वाली हिन्दी गृह पत्रिका 'पत्तन भारती' का प्रकाशन पुन: आरम्भ किया जा रहा है। राजभाषा के अनुपालन की दृष्टि से इस गृह पत्रिका का प्रकाशन महत्वपूर्ण है। यह महसूस किया गया कि हमारे पत्तन-परिवार के सदस्यों में निहित प्रतिभा को अभिव्यक्त करने के लिए उपयुक्त मंच प्रदान किया जाए। इससे उन्हें आत्म संतुष्टि और विश्वास प्राप्त होगा और वे अपने कार्यों को और अधिक समर्पित भाव से कर पाएंगे।

कोलकाता पत्तन ने अपने व्यावसायिक कार्यकलापों के साथ-साथ राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य किया है। दिनांक 6 जनवरी, 2016 को नई दिल्ली में आयोजित पोत परिवहन मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति की बैठक में पोत परिवहन मंत्रालय की राजभाषा शील्ड योजना के तहत माननीय पोत परिवहन मंत्री श्री नितिन गडकरी जी से हमें द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ है। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) कोलकाता की ओर से दिनांक 11 अगस्त, 2016 को महामहिम राज्यपाल के कर-कमलों से भी हमें पुरस्कार प्रदान किया गया है।

मेरा अटूट विश्वास है कि पत्तन स्तर पर 'पत्तन भारती' जैसी गृह पत्रिका के प्रकाशन से जहाँ एक ओर पत्तन में राजभाषा कार्यान्वयन में गति आएगी, वहीं दूसरी ओर कर्मियों को अपनी लेखकीय क्षमता और दक्षता अभिव्यक्त करने का उचित अवसर भी मिलेगा। यह पत्रिका प्रकाशित होती रहे तथा इसका हर अंक नया कलेवर लिए सरस एवं संग्रहणीय हो, यही मेरी कामना है।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

एस. प्रधान
(एस. प्रधान)
सचिव

SAGARMALA
PORT-LED PROSPERITY

सम्पादकीय

'पत्तन भारती' का यह अंक बहुत दिनों की प्रतीक्षा के बाद आप सभी को समर्पित करते हुए मुझे बहुत ही गर्व हो रहा है। इसके लिए मैं वरिष्ठ अधिकारियों की उदार विचारधारा एवं प्रेरणा के लिए अंत:करण से आभारी हूँ, जिनके सहयोग, दिशानिर्देश एवं प्रोत्साहन के बिना इसका प्रकाशन सम्भव नहीं हो पाता।

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाएँ रचनाकारों के ज्ञान, सृजन एवं अभिरुचियों की इन्द्रधनुषी झलक प्रस्तुत करती है। आशा है रचनाएँ सुधी पाठकों को पसंद आएगी।

'पत्तन भारती' का दायरा और अधिक सम्प्रसारित, आकर्षक तथा सूचनापरक करने के उद्देश्य से आप एवं आपके परिवार के सदस्यों से कविताएँ, कहानियाँ, विशेष उपलब्धियां, सूचनात्मक लेख, संस्मरण, चुटकले आदि आमंत्रित हैं। साथ ही, प्रकाशन के लिए फोटो भेजे। साथ ही साथ इस अंक के कलेवर और उसकी सामग्री के बारे में आपके बहुमूल्य विचारों एवं सुझावों की भी हमें प्रतीक्षा रहेगी।

स्वर्णिम सुखमय भविष्य की शुभकामनाओं सहित,

(अशोक कुमार ठाकुर)

स्वागत

श्री जी. सेंथीलवेल
उपाध्यक्ष, हल्दिया
आपने उपाध्यक्ष (हल्दिया) के रूप में दिनांक 08 अगस्त, 2016 को कार्यभार ग्रहण किया। पत्तन-परिवार आपका हार्दिक स्वागत करता है।

श्री एस. के. सादंगी, आईआरएसएस
मुख्य सतर्कता अधिकारी
आपने मुख्य सतर्कता अधिकारी के रूप में दिनांक 01 अगस्त, 2016 को कार्यभार ग्रहण किया। पत्तन-परिवार आपका हार्दिक स्वागत करता है।

कप्तान जे.जे.विश्वास
निदेशक, मरीन विभाग
आपने दिनांक 5 जुलाई 2016 को मरीन विभाग के निदेशक के पद पर कार्यभार ग्रहण किया। पत्तन-परिवार की ओर से आपको हार्दिक बधाई।

श्रीमती एस. प्रधान
सचिव
आपने दिनांक 8 सितम्बर 2016 को प्रशासन विभाग के सचिव के पद पर कार्यभार ग्रहण किया। पत्तन-परिवार की ओर से आपको ढेर सारी बधाइयाँ।

कप्तान हिमांशु शेखर
यातायात प्रबन्धक
आपने कोलकाता पत्तन न्यास में यातायात प्रबन्धक के रूप में दिनांक 15 दिसम्बर 2016 को कार्यभार ग्रहण किया। पत्तन-परिवार आपका हार्दिक स्वागत करता है।

श्री सोमनाथ मुखर्जी
मुख्य यांत्रिक अभियंता
आपने दिनांक 10 अप्रैल 2017 को मुख्य यांत्रिक अभियंता के पद पर कार्यभार ग्रहण किया। पत्तन-परिवार की ओर से आपको बहुत-बहुत बधाई।

कोलकाता पत्तन - निरंतर सेवा के पथ पर

कोलकाता पत्तन पूर्वी भारत का प्रवेश द्वार है। यह भारत का प्रथम महापत्तन है, जिसका उद्भव सामुद्रिक मानचित्र पर 1870 में हुआ। यह देश का एकमात्र नदी महापत्तन है, जिसका नौगमन मार्ग विश्व का सबसे लंबा है। कोलकाता गोदी हुगली नदी के बाएं किनारे पर 232 कि.मी. की दूरी पर अवस्थित है, सागर और डायमंड हारबर के मार्फत पूर्वी चैनेल द्वारा इससे संपर्क किया जा सकता है। हल्दिया गोदी 125 कि.मी. की दूरी पर अवस्थित है और इडेन तथा जेलिंघम चैनेल के मार्फत संपर्क किया जा सकता है। समुद्र से लगभग 90 कि.मी. की दूरी के लिए जहाजों को जलयान यातायात प्रबंधन प्रणाली (वीटीएमएस) के जरिए सहायता प्रदान की जाती है।

पत्तन राष्ट्रीय व राज्य के राजमार्गों, रेलवे तथा राष्ट्रीय जलमार्गों के साथ पूर्णत: संयोजित है। केडीएस एनएच-6, एनएच-2 तथा एनएच-34 के साथ जुड़ा हुआ है। एनएच-41 हल्दिया गोदी को एनएच-6 तथा देश के अन्य भागों के साथ जोड़ता है। कोलकाता गोदी सियालदह तथा बजबज अनुभागों के मार्फत पूर्वी रेलवे के साथ जुड़ा हुआ है, जबकि हल्दिया दक्षिण-पूर्व रेलवे के साथ पांसकुड़ा के माध्यम से जुड़ा हुआ है। कोलकाता पत्तन राष्ट्रीय जलमार्ग-1(गंगा), राष्ट्रीय जलमार्ग-2 (ब्रह्मपुत्र) तथा सुंदरवन और बांग्लादेश के साथ जलमार्गों से जुड़ा हुआ है।

निष्पादन सुर्खियां : वर्ष 2016-17 में कोलकाता पत्तन ने 50.314 मिलियन टन माल थ्रुपुट संचालन किया, जबकि 2015-16 में यह 50.289 मिलियन टन था। कंटेनर यातायात में कोलकाता पत्तन द्वारा 16.41% की उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज करते हुए 7,71,676 टीईयूज का संचालन किया गया (महापत्तनों द्वारा दर्ज की गई वृद्धि 3.04% थी) और महापत्तनों में **तृतीय स्थान** हासिल किया। वर्ष 2016-17 में कोलकाता पत्तन कुकिंग तथा अन्य कोयला/कोक संचालन के मामले में अखिल भारतीय महापत्तनों में **प्रथम** रहा और अन्य तरल माल के संचालन में **द्वितीय** रहा। कोलकाता पत्तन ने वर्ष 2016-17 में भारतीय महापत्तनों में संचालित जलयानों में सर्वाधिक 3431 जलयानों का संचालन किया। सचिव, पोत परिवहन की अध्यक्षता में हुई समीक्षा बैठक में वर्ष 2015-16 के दौरान यातायात में उच्चतर वृद्धि के लिए कोलकाता पत्तन **तीसरे स्थान** पर रहा। एक्जिम ग्रुप ने 2015-16 के लिए कोलकाता पत्तन को 'वर्ष का कंटेनर पत्तन' के रूप में घोषित किया।

विगत वर्ष के मुकाबले वर्तमान वर्ष में सभी प्रमुख सक्षमता पैरामिटरो में पत्तन का निष्पाादन श्रेष्ठ रहा और औसत टर्न राउण्ड समय (टीआरटी), औसत पूर्व-बर्थिंग अवरोध(पीबीडी) में कमी आई है तथा पोत दिवस उत्पादन बढ़ा है। इडेन चैनेल पूरी तरह परिचालित है और वर्ष 2016-17 के दौरान 4148 पोतों का आवागमन इसके मार्फत हुआ। भारत-बंगलादेश के मानक प्रचालन प्रकिया (एसओपी) के हस्ताक्षरित होने से एक्जिम कार्गो की परिवहन लागत कम हुई है और पोत कोलकाता पत्तन पर आ रहे हैं।

अगस्त, 2016 में मुंबई में गौरवपूर्ण गेटवे एवार्ड 2016 में कोलकाता पत्तन को उच्च उत्पादकता तथा ग्राहक संतुष्टि के लिए वर्ष का महापत्तन के रूप में सम्मानित किया गया। विगत वर्ष भी यह सम्मान प्राप्त हुआ था।

मैरीटाइम इंडिया शिखर सम्मेलन (MIS 2016) 14-16 अप्रैल, 2016 के दौरान मुंबई में संपन्न हुआ। सम्मेलन का शुभ उद्घाटन माननीय प्रधान मंत्री जी ने किया था। सम्मेलन में कोलकाता पत्तन भी शामिल हुआ। कोरिया गणतंत्र एक सहयोगी देश के रूप में शामिल था और इसमें विश्व से 2000 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। यह मैरीटाइम सेक्टर में प्रेरक निवेश अवसर का द्योतक है।

हल्दिया गोदी परिसर में ट्रांसलोडिंग कारोबार

कोलकाता पत्तन न्यास के हल्दिया गोदी परिसर में प्रथम ट्रांसलोडिंग कारोबार सोमवार, दिनांक 13 मार्च, 2017 को 11.30 बजे सैंडहैड्स पर शुरू हुआ जब एम.वी. अन्नी सेलमेर द्वारा ढोए गए 44,000 मैट्रिक टन स्टीम कोयला ट्रांसलोडर एम.वी. विघ्नहर्त्ता पर खाली करना शुरू किया गया। करीब 21000 मैट्रिक टन माल ट्रांसलोडर पर खाली किया जाएगा और उसके बाद दोनों पोत हल्दिया की ओर माल उतारने के लिए रवाना होंगे।

हल्दिया गोदी परिसर द्वारा हल्दिया में नदी-ड्राफ्ट की सीमाबद्धता से उबरने के लिए ट्रांसलोडिंग प्रणाली अपनाई गई है और मेसर्स जिंदल आईटीएफ लि0 को लाइसेंस प्रदान किया गया है। इस ट्रांसलोडिंग कारोबार के परिणामस्वरूप अब हल्दिया गोदी परिसर पूरे भरे हुए 75,000 मैट्रिक टन कार्गो वाले पैनामैक्स पोत के संचालन में सक्षम होगा। यह पत्तन को दो बार माल उतारने की समस्या से निजात दिलाएगा और हल्दिया गोदी परिसर स्वयं संपूर्ण पोत-कार्गो को संचालित कर सकेगा। इस ट्रांसलोडिंग कारोबार से पत्तन प्रयोक्ता समय और लॉजिस्टिक दोनों की बचत कर सकेंगे।

सर्वकालिक रिकार्ड - कंटेनर यातायात के संचालन में

अध्यक्ष द्वारा प्रेस को संबोधन

कोलकाता पत्तन न्यास की कोलकाता गोदी प्रणाली (केडीएस) ने विगत वित्त वर्ष में कंटेनर संचालन में एक नई ऊँचाई प्राप्त कर इतिहास रचा है। 12 मार्च, 2017 को कोलकाता गोदी प्रणाली ने उच्चतम कंटेनर थ्रुपुट अर्थात 6 लाख से अधिक टीईयूज का संचालन किया, जो 1979 में कोलकाता पत्तन न्यास की कोलकाता गोदी प्रणाली में कंटेनरीकरण शुरु किए जाने के समय से अब तक का सर्वोच्च है। 2015-16 में कोलकाता गोदी प्रणाली ने 577749 टीईयूज का संचालन किया था।

अध्यक्ष, कोलकाता पत्तन न्यास ने कहा कि कंटेनर संचालन का यह सर्वकालिक रिकार्ड नदी की ड्राफ्ट समस्या, परिबद्ध गोदी में लॉक परिचालन के चलते अनिवार्य पोत विलंब, नदी पत्तन होने के नाते पोत के आने-जाने में ज्वार पर निर्भरशीलता की गंभीर परिचालनगत बाधाओं के बावजूद प्राप्त किया जा सका है।

इस संबंध में, श्री कृष्णबाबु, अध्यक्ष ने आगे कहा कि व्यापार की सभी बाधाओं और चुनौतियों के बावजूद ऐसी गौरवपूर्ण उपलब्धि कंटेनर संचालन में तकनीकी उन्नयन द्वारा संभव हो सका है। कोलकाता गोदी प्रणाली में कंटेनर यातायात की असामान्य वृद्धि, ग्राहक के दृढ़ समर्थन, केडीएस के अधिकारियों द्वारा वर्षों से शुरू किए गए कठिन मार्केटिंग द्वारा कायम रखी जा सकती है।

क्रूज लाइनर का कोलकाता पत्तन में आगमन

श्री गौतम चक्रवर्ती, सुरक्षा सलाहकार

क्रूज लाइनर का आगमन

भोजन कक्ष

आठ साल के लम्बे अंतराल के बाद कोलकाता गोदी प्रणाली को दो दिनों के लिए एक क्रूज लाइनर की मेजबानी करने का बहुमूल्य मौका मिला। यह लक्जरी जहाज, थाईलैण्ड के फुकेट से बांग्लादेश मार्फत कोलकाता पहुँचा और सोमवार शाम दिनांक 27 फरवरी, 2017 को उसी जलमार्ग से वापस लौट गया। इसमें 120 से अधिक मुसाफिर और 99 चालक सवार थे। उल्लेखनीय है कि एमवी सिल्वर डिस्कवरर, एक 103 मीटर-लम्बा याट क्रूज जहाज कोलकाता की नेताजी सुभाष गोदी में लंगर किया। इसने बंग्लादेश मैनग्रोवों से होते हुए म्यांमार में विभिन्न ऐतिहासिक स्थलों का सैर किया। भ्रमण के दौरान, सैलानियों को जीवविज्ञानियों, पक्षीविज्ञानियों और इतिहासकारों द्वारा सहायता प्रदान की गई थी। क्रूज लाइनर में आधुनिकतम सुविधाएँ थीं, जिसमें एक स्विमिंग पुल, एक जिमनाशियम, एक जोगिंग ट्रेक, एक रेस्तराँ और एक लाउंज बार भी शामिल थी। सिल्वर डिस्कवरर नामक यह पोत सामुद्रिक जीवन की खोजबीन के लिए 12 जोडाइक नावों और एक काँच से निर्मित निचली-सतह वाली नाँव से सज्जित थी।

स्वींमिंग पूल

नेताजी सुभाष गोदी

एलिस बर्थेल, एक उत्साही पर्यटक ने कहा कि यह जलयात्रा बहुत सुखद रही है। वे हमेशा चाहते थे कि सुन्दरवन का सफर करें और इस सफर ने आखिरकार इसे सम्भव कर दिया। ये दुखद है कि वे कोलकाता में और समय नहीं बिता सके।

2008 में दिसम्बर महीने के दौरान, एक अंतरराष्ट्रीय क्रूज जहाज कोलकाता गोदी प्रणाली में प्रवेश किया था। मुसाफिर जहाजों की मेजवानी करने का लम्बा इतिहास कोलकाता पत्तन का है। पर यह भी सत्य है कि अब कोई यात्रा के लिए जहाज का इस्तेमाल नहीं करता है, लेकिन समुद्री पर्यटन की प्राचीन परम्परा एक अलग तरीके से फिर से प्रचलित हो रहा है।

समुद्री अभिलेखागार और विरासत केन्द्र

श्रीमती एस. प्रधान, सचिव

कोलकाता पत्तन न्यास के समुद्री अभिलेखागार की स्थापना वर्ष 2009 में एक सौ वर्ष पुराने गोदाम (फेयरली वेयरहाउस) में की गई थी। यह पहली मंजिल पर करीब 90,000 वर्ग फीट में फैला हुआ है। 2005 में जब इस स्थान को चुना गया, तब यह एक परित्यक्त भवन-सा लगता था और इसका अहाता बगल के चक्र रेल के यात्रियों का आम रास्ता बना हुआ था। एक समर्पित दल (जिसमें हर स्तर के व्यक्ति, उच्च अधिकारी और अभियंता से लेकर बढ़ई तक शामिल थे) की स्वतः स्फूर्त और समर्पण-भाव से की गई मेहनत और कोशिशों के परिणामस्वरूप यह केंद्र धीरे-धीरे विकसित हुआ। 17 जून, 2009 को इसका औपचारिक रूप से उद्घाटन हुआ और तब से देश-विदेश के विद्वानों, शोध-छात्रों व पर्यटकों का आगमन शुरू हुआ। पुराने वेयरहाउस में अभिलेखागार की स्थापना से इस गोदाम की सम्भावनाएँ खुल गई और भवन में शीघ्र ही आधुनिक सुविधायुक्त अन्य कई कार्यालय खुल गए।

समुद्री अभिलेखागार पुराने रिकार्डों, नक्शें और रेखाचित्रों का भण्डार है, जिन्हें उपयुक्त साफ्टवेयर में संख्याबद्ध और तिथि अनुसार व्यवस्थित किया गया है, ताकि दूर-दराज स्थानों से फाइलों की संख्या अथवा विषय के आधार पर फाइलों की पहचान की जा सके। पर्यटकों और अनुसन्धानकारी विद्वानों के लिए इस केन्द्र को आकर्षक बनाने के लिए राज्य अभिलेखागार तथा राष्ट्रीय अभिलेखागार में उपलब्ध सम्बन्धित रिकार्डों की प्रतियाँ प्राप्त की गई हैं और एक ही छत के नीचे इन्हें रखा गया है। केन्द्र में पुराने एलबम, फोटोग्राफ और विडियो भी संग्रहित किए गए हैं। यहाँ आम जनता के लिए विभिन्न कार्यालयों, नदी सर्वे स्टेशनों आदि से एकत्रित की गई कलाकृतियों की बहुमूल्य प्रदर्शनी है। इनमें सागर दीप स्तंभ का नमूना और उसकी 150 वर्ष पुरानी निरीक्षण बही, 100 वर्ष पुरानी एक बृहत घड़ी (जिसकी प्रापण फाइल भी टैग की जा सकी है), हावड़ा पुल निर्माण के दौरान इस्तेमाल किए गए एक अति परिशुद्ध स्टील टेप जिसे लंदन से लाया गया था, विरल नौगमन लानटेन, अतीत में केओपीटी के जहाजी बेड़ा के जहाजों के मॉडल आदि शामिल है। दीवारों पर पत्तन के इतिहास तथा मुख्य घटनाओं के पैनल भी प्रदर्शित किए गए हैं। प्रसंगवश, केओपीटी के बेवसाइट में Maritime Archive and Heritage Centre के शीर्ष के अंतर्गत पैनल प्रदर्शनी भी देखी जा सकती है।

संजीदा पर्यटकों/विद्वानों के लिए, कार्य-स्थल सहित अनुसन्धान-क्षेत्र उपलब्ध है। हमें घरेलू और विदेशी विश्वविद्यालयों/संस्थाओं से जिज्ञासाएं प्राप्त हुई हैं। अपने पूर्वजों की खोज में विदेशी पर्यटक यहां आते रहते हैं। आवश्यक उपकरण जैसे कि फ्यूमिगैशन चैम्बर, वेकुम फ्रीज ड्राइयर्स लगाया गया है ताकि रिकार्डों को संरक्षित रखा जा सके। डॉ. एस. सरकार, सेवानिवृत्त महानिदेशक, राष्ट्रीय अभिलेखागार, भारत, के दक्ष दिशानिर्देश के तहत रिकार्ड-कमरों में अपेक्षित रोशनी और वायु-संचार की व्यवस्था सुनिश्चित की गई है। डॉ. पी. चटर्जी, सेवानिवृत्त निदेशक, पश्चिम बंगाल राज्य अभिलेखागार द्वारा पैनलों पर ऐतिहासिक दृष्टिकोण से चित्र विकसित किए गए हैं। राष्ट्रीय अभिलेखागार और राज्य अभिलेखागार से कार्मिकों के एक दल को रिकार्डों को व्यवस्थित और संरक्षित रखने के लिए लगाया गया है।

भारतीय रिकार्ड अधिनियम, 1993 के अनुसार, भारत के राष्ट्रीय अभिलेखागार (एनएआई), की विशेष सहमति के बिना 25 वर्षों से अधिक पुराना किसी भी रिकार्ड को नष्ट नहीं किया जा सकता है। तदनुसार, केओपीटी के रिकार्ड रूम का राष्ट्रीय अभिलेखागार के दलों द्वारा नियमित रूप से दौरा किया जाता है, जो रखे जाने वाले रिकार्डों के बारे में निर्णय लेते हैं और उसके बाद उन्हें भुवनेश्वर स्थित अपने केन्द्र को स्थानांतरित कर देते हैं। ऐसे रिकार्डों को भेजने से पहले इनकी स्कैन की हुई प्रतियां केओपीटी द्वारा रख ली जाती है।

संग्रहालय को सामान्य पर्यटकों, स्कूल एवं कॉलेज के छात्रों के लिए फलप्रद भ्रमण/सूचना-संपर्क-स्थल के रूप में व्यवस्थित करने और आधुनिकतम सुविधाओं से युक्त करते हुए और अधिक आकर्षक बनाने की परिकल्पना जारी है। इसे विकसित करने, विशेषकर रिकार्डों के संरक्षण और डिजिटल प्रतियों के रख-रखाव के लिए विचारों, सुझावों और स्वैच्छिक-श्रम का स्वागत है।

सूरीनाम के भारतीय गिरमिटिया

माननीया विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज ने बुधवार, दिनांक 7 अक्तूबर, 2015 को हुगली नदी के बाएं किनारे, कोलकाता पोर्ट के नेताजी सुभाष डॉक क्षेत्र में अवस्थित सूरीनाम घाट पर सूरीनाम स्मारक का उद्घाटन किया। सादे परिधान में उस युगल प्रतिमा के हाथों में पोटली है। यह स्मारक उन भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के सम्मान में है जो 1873 से 1917 के दौरान दक्षिण अमेरिका के उत्तर-पूर्वी अटलांटिक तट पर स्थित छोटे से देश सूरीनाम को गये थे।

यह स्मारक 'बाबा और माई' या 'माई बाप' के मूल स्मारक को प्रतिबिंबित करता है जो सूरीनाम की राजधानी पारामारिबो में है, जो भारतीय तटों से गन्ने की खेती के लिए रवाना हुए 'बाबा और माई' का प्रतीक है, जो गिरमिटिया मजदूर के रूप में इस डच-भाषी देश में पदार्पण करने वाले प्रथम भारतीय स्त्री और पुरुष का द्योतक है।

1863 में सूरीनाम के डच कालोनी में दास प्रथा समाप्त हो गई थी किंतु प्लांटेशन कालोनी के रूप में कुशल मजदूरों की आवश्यकता थी, अतएव इस्ट इंडिया कंपनी के सहयोग से डच भोजपुरी क्षेत्र से अधिकतर कामगारों को लाना चाह रहे थे। भोजपुरी क्षेत्रों के इन मजदूरों को एक डच-डिपों से दूसरे उप डिपो होते हुए अंत में 20 गार्डेनरीच, कोलकाता पोर्ट के इसी स्थान पर लाया गया था। यहां आने पर उन्हें एक थाली, एक लोटा, एक जोड़ी कुर्ता या साड़ी और धोती दिया गया।

1870 में ब्रिटेन की रानी विक्टोरिया और हॉलैंड के सम्राट विलियम तृतीय के बीच हुए एक समझौते के परिणामस्वरूप भारत से सूरीनाम के लिए शर्तनामे पर मजदूरों की भर्ती शुरू हुई और पुरानी दास प्रथा को शर्तबंधी का नया जामा पहनाकर पुनर्जीवित किया गया। सूरीनाम के लिए भारतीय मजदूरों के निर्यात हेतु डच एजेंटों ने कलकता में अपना मुख्य डिपो खोला और भर्ती के लिए गोरखपुर, इलाहाबाद, बनारस, बस्ती व मथुरा में उपकेंद्र खोले। उत्तर प्रदेश के पूर्वी भागों व बिहार की ग्रामीण जनता के बीच यह प्रचार किया गया कि समुद्र के बीचों-बीच श्रीराम द्वीप हैं जहां हर प्रकार की सुख-सुविधाएं हैं और बेहतर जीवन के साथ धर्म कमाने का भी लाभ मिल सकता है। श्रीराम-देश के सुख और धर्म प्राप्ति की लालसा में भोले-भाले लोग अनजाने स्थान पर जाने को तैयार हो गए। 410 लोगों को कोलकाता डिपो से 26 फरवरी, 1873 को लालारुख जहाज से रवाना किया गया। अनेक कठिनाइयों, खराब मौसम आदि का सामना करते हुए यह जहाज तीन माह एक सप्ताह बाद 5 जून, 1873 को पारामारिबो पहुंचा और भारतीयों के कदम सूरीनाम की पावन धरती पर पड़े। कालांतर में 64 जहाजों द्वारा 34304 भारतीय मजदूर सूरीनाम पहुंचाए गए।

लालारुख से सूरीनाम आगमन के पश्चात हिंदुस्तानियों को जिस कठिन दौर से गुजरना पड़ा वह एक दर्द भरी कहानी है। कुली शब्द से संबोधित इन भारतवंशियों के साथ बहुत अच्छा व्यवहार नहीं किया जाता था। दु:ख-दर्द की यह दास्ताँ समय के साथ भारत भी पहुंची और वहां शर्तबंधी समाप्त करने के लिए आवाज उठाई गयी।

सूरीनाम गये 'बाबा और माई' भारतीय संस्कृति को वहां भी सिंचित करते रहे। भारतवंशी अपने सांस्कृतिक धरोहरों के आसरे जीवन के कठिन डगर पर अविरल बढ़ते रहे। इनकी आस्था इनकी संस्कृति के आँचल की छांव में पोषित होती रही ढोल नगारे की ताल, भजन-कीर्तन और नृत्य इनके सम्पूर्ण दिवस के दु:साध्य-श्रम को शमित कर देता था। आज वह भारत का एक प्रतिरूप-सा प्रतीत होता है। वहां सांस्कृतिक भिन्नता और माथा भेद होने के बावजूद, उन त्योहारों को मनाते हैं जिसे हम मनाते हैं, यह वह गुण है जिसे एक भारतीय सुरक्षित रखता है।

सूरीनाम के कवि श्री अमर सिंह 'रमन' की निम्न रचना में आप्रवासी की व्यथा व्यक्त हुई है-

वही दिनवा जब याद आवेला अंखिया में भरेला पानी रे।
हिंदुस्तान से भगाकर आइली यही है अपनी कहानी रे
अरकटिया खूब भरमवलीस कहै पैसा कर्मबू भर-भर थाली रे
वही चक्कड़ मा पड़ गइली, बचवा याद आय गइल नानी रे।
मारिया भैश के जंगल मा बीती मोरी जवानी रे
तब भी कमाय कमाय के लड़कन के खूब पढ़वली रे।
डॉक्टर वकील, सेस्तर, जज, सिपाही, खूब बनवली रे

संकलित-
श्री अशोक कुमार ठाकुर
वरि. सहा. सचिव (रा.भा.)

कादम्बिनी गंगोपाध्याय - दक्षिण एशिया की पहली महिला चिकित्सक

प्रभात कुमार चट्टोपाध्याय, स्थापना अधिकारी, मरीन विभाग

आजकल, शिक्षा प्रांगण में बड़ी संख्या में लड़कियों की भीड़ होना सामान्य बात है। इस 21वीं शताब्दी में शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में लड़कों के साथ-साथ समान रूप से लड़कियाँ भाग ले रही हैं। किंतु 150 साल पहले पराधीन भारत में इस सुपरिचित दृश्य की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी । उस समय लड़कियों को पढ़ाई-लिखाई सीखने के लिए किसी प्रकार का मौका नहीं था। ऐसे में स्त्री शिक्षा प्रसार के लिए पण्डित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, पण्डित मदनमोहन तर्कालंकार, बेथुन साहिब और अन्य अनेक विशिष्ट बंगालियों ने अग्रणी भूमिका निभाई थीं। उन सभी की निष्ठा और कठिन प्रयासों के फलस्वरूप 1849 में कलकत्ता फिमेल स्कूल की स्थापना हुई, जो कि अब बेथुन कॉलिजियट स्कूल के नाम से परिचित है। परिणामत: लड़कियों के लिए लिखाई-पढ़ाई के अवसर खुल गए।

वर्षों बाद 1861 में कादम्बिनी ने इस कलकत्ता शहर में जन्म ग्रहण किया। उनके पिता ब्रजकिशोर बसु भागलपुर में हेडमास्टर थे, जो ब्राह्मधर्मावलम्बी व विशिष्ट शिक्षाविद थे। उनका आदि निवास था बरिसाल का चाँदसी अंचल।

किशोरी कादम्बिनी बेथुन स्कूल में भर्ती हुई थी। वहाँ से 1878 में उन्होंने एन्ट्रेन्स परीक्षा श्रेष्ठता सहित उत्तीर्ण किया। उसके बाद, प्रवेशिका परीक्षा में बैठी और सफल छात्रों में अपना नाम जोड़ लिया। अत्यंत मेधावी छात्रा के रूप में अपनी योग्यता पर यह असामान्य नारी उस समय के समाज के विशिष्ट व्यक्तियों की दृष्टि आकर्षित कर सकी थीं। चन्द्रमुखी बसु एवं कादम्बिनी देवी ने काफी अच्छे अंकों से वर्ष 1883 में बेथुन कॉलेज से बी.ए. परीक्षा उत्तीर्ण की और अँग्रेज़ शासित भारत की प्रथम स्नातक (ग्रैजूएट) महिला हुईं। अगले वर्ष ही अर्थात 1884 में कादम्बिनी देवी कलकत्ता मेडिकल कॉलेज में भर्ती हुईं। उन्होंने सभी परीक्षाओं को सफलता सहित उत्तीर्ण किया किंतु अंतिम परीक्षा के समय अध्यापक के साथ असंतोष के कारण अनुत्तीर्ण हो गईं। उन्हें जी.बी.एम.सी. की उपाधि दी गई। परंतु उनकी जैसी तेजस्वी महिला इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना से विचलित नहीं हुई। आखिरकार, 1892 में वे इंगलैण्ड के लिए रवाना हो गईं और अगले साल एल.आर.सी.पी. (एडिनबरा), एल.आर.सी.एस., डी.एफ.पी.एस. की उपाधि लेकर देश लौट आई। चिकित्सा जगत में प्रवेश करते हुए उन्होंने लेडी डॉफरीन अस्पताल में नौकरी शुरू की। उसके पश्चात नौकरी से इस्तीफा देकर, उन्होंने स्वतंत्र रूप से चिकित्सा शुरू की और चिकित्सा क्षेत्र में ख्याति अर्जित की। इस बीच वे विशिष्ट शिक्षाविद द्वारकानाथ गंगोपाध्याय के साथ विवाह सूत्र में आबद्ध हुई। उनके पति स्त्री शिक्षा के प्रसार में एक अग्रणी व्यक्ति थे। उनके साहचर्य एवं अनुप्रेरणा से कादम्बिनी देवी समाज में अपने को एक सुचिकित्सक के रूप में प्रतिष्ठित कर पाई थी।

इसके अतिरिक्त, बम्बई काँग्रेस (1899) में वे महिला प्रतिनिधि दल की मुख्य सदस्य थी। भारतीय राष्ट्रीय कॉग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन (1890) में उन्होंने अंग्रेज़ी में भाषण दिया था, वे प्रथम महिला वक्ता थी। गाँधी जी से निकटता के कारण वे हेनरी पोलक द्वारा स्थापित 'ट्रांसवेल इण्डियन एसोसियसन' की प्रथम सभापति बनीं। कलकत्ता में आयोजित महिला सम्मेलन (1907) की एक उत्साही सदस्य तथा बिहार-उड़िसा की महिला श्रमिकों की स्थिति सुधारने के लिए गठित अनुसन्धान कमीशन (1922) की मुख्य सदस्य थीं। एक अच्छी वक्ता के रूप में उनकी ख्याति थीं। आठ संतानों की माँ होने के बावजूद, घरेलू कामकाज निभाते हुए अनेक सामाजिक कार्यों में लीन रहती थीं- यह असाधारण नारी।

किंतु यह दुखद है कि ऐसी महान नारी को आज भूला दिया गया है। उनके प्रदर्शित पथ को यदि आज की लड़कियाँ अनुकरण करें तो हमारा समाज और सुन्दर हो जाएगा।

श्री नितिन गडकरी, माननीय पोत परिवहन मंत्री द्वारा दिनांक 06.01.2016 को सम्पन्न पोत परिवहन मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति की बैठक में हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए कोलकात्ता पत्तन न्यास को द्वितीय पुरस्कार प्रदान करते हुए।

पश्चिम बंगाल के महामहिम राज्यपाल श्री केसरी नाथ त्रिपाठी के कर-कमलों से कोलकाता पत्तन न्यास को राजभाषा हिन्दी में उल्लेखनीय कार्यान्वयन के लिए सम्मान

केन्द्रीय कांच एवं सिरामिक अनुसंधान संस्थान के मेघनाद साहा प्रेक्षागृह में, कोलकाता अवस्थित सार्वजनिक उपक्रमों के लिए गठित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की छमाही बैठक-सह-राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित पश्चिम बंगाल के महामहिम राज्यपाल श्री केसरी नाथ त्रिपाठी के कर-कमलों से कोलकाता पत्तन न्यास को नराकास की 'राजभाषा पुरस्कार योजना-2015-16' के अंतर्गत 'निगमित कार्यालय वर्ग' के तहत उल्लेखनीय राजभाषा कार्यान्वयन के लिए सम्मानित किया गया जिसे कोलकाता पत्तन की ओर से श्रीमती शर्मिष्ठा प्रधान, सचिव ने ग्रहण किया एवं श्री अशोक कुमार ठाकुर, वरिष्ठ सहायक सचिव (राजभाषा) को प्रशस्ति-फलक प्रदान किया गया।

हिंदी कार्यशालाओं की झलकियां

कोलकाता पत्तन में हिंदी दिवस व पखवाड़ा और पुरस्कार वितरण समारोह

कोलकाता पत्तन न्यास में दिनांक 14 सितम्बर, 2016 को हिन्दी दिवस का पालन माननीय उपाध्यक्ष श्री एस. बालाजी अरुणकुमार द्वारा पारम्परिक प्रदीप प्रज्वलन के साथ किया गया। इस अवसर पर कोलकाता गोदी प्रणाली के अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित थे।

श्री एस. बालाजी अरुण कुमार, उपाध्यक्ष, हिन्दी दिवस समारोह में प्रदीप प्रज्वलन के शुभ मुहूर्त पर

इस अवसर पर, माननीय गृह मंत्री द्वारा दिए गए संदेश को संप्रेषित किया गया। माननीय उपाध्यक्ष महोदय ने हिन्दी पखवाड़े का विधिवत उद्घाटन करते हुए सभी से इसमें स्वत:स्फूर्त भाग लेने और सफल बनाने का अनुरोध किया। हिन्दी पखवाड़ा दिनांक 14 सितम्बर से 28 सितम्बर, 2016 तक आयोजित किया गया। इस दौरान, कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने तथा हिन्दी के प्रति उनके रुझान व रुचि बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में आशु-वक्तृता, हिन्दी कविता आवृत्ति, हिन्दी फोनेटिक टाइपिंग, शब्दावली एवं टिप्पणी लेखन, सुलेख तथा क्विज प्रतियोगिताएं शामिल थीं। सुलेख प्रतियोगिता का आयोजन केवल चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों के लिए किया गया था, जिसमें उन्होंने काफी उत्साह पूर्वक और बड़ी संख्या में अंश ग्रहण किया। इस अवसर पर, श्रीमती शर्मिष्ठा प्रधान, सचिव, ने उपस्थित सभी का स्वागत करते हुए कहा कि हिन्दी दिवस व पखवाड़ा मनाना हमारे लिए एक सांविधिक दायित्व तो है ही, साथ ही इसका उद्देश्य यह है कि हम राजभाषा हिन्दी का प्रयोग अपने कार्यालयीन कामकाज में निरंतर बढ़ाते रहें ताकि सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को हम प्राप्त कर सकें। यह हमारा राष्ट्रीय दायित्व है कि हम अपनी भाषा में सारा कार्य करें।

माननीय उपाध्यक्ष श्री एस. बालाजी अरुणकुमार ने अपने सम्बोधन में कहा कि हमें ध्यान रखना होगा कि हमारी भाषा सरल और आम बोलचाल की भाषा हो, ताकि सभी आसानी से समझ सके। हिन्दी हमारी राजभाषा ही नहीं, भावात्मक एकता तथा सांस्कृतिक अस्मिता की भाषा है। यह राष्ट्र गौरव का प्रतीक है। हमें हिन्दी के विकास और प्रचार-प्रसार के लिए सतत प्रयत्नशील रहना है। समारोह के दौरान, विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया तथा वर्ष 2015-2016 के लिए आयोजित अंतर विभागीय राजभाषा प्रतियोगिता के विजयी विभागों/प्रभागों को पुरस्कृत किया गया।

श्री एस. एस. चटर्जी, उपसचिव ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए समारोह की सफलता के लिए हिन्दी कक्ष की प्रशंसा की। कार्यक्रम का संचालन श्री अशोक कुमार ठाकुर, वरिष्ठ सहायक सचिव (राजभाषा) द्वारा किया गया।

कोलकाता पत्तन न्यास में केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के तत्वावधान में आयोजित अनुवाद प्रशिक्षण

कोलकाता पत्तन न्यास में केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से पहली बार पाँच दिवसीय अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम पत्तन के प्रशिक्षण संस्थान, पी 38/4 रामकृष्णदेव सरणी (हाईड रोड), कोलकाता-43 में आयोजित किया गया, जिसमें पर्याप्त संख्या में पत्तन के अधिकारियों और कर्मचारियों ने भाग लिया। इसका विधिवत उद्घाटन श्री टी. के. हाजराचौधुरी, वरिष्ठ उप सचिव ने किया, उन्होंने अपने संबोधन में कामकाजी हिन्दी भाषा पर बल दिया।

व्याख्याता के रूप में केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के सहायक निदेशक श्री राकेश कुमार पाठक और डॉ0 राम बिनोद सिंह उपस्थित थे। अतिथियों का स्वागत श्री अशोक कुमार ठाकुर, वरिष्ठ सहायक सचिव (राजभाषा) ने किया।

हिंदी प्रतियोगिताओं में सफल प्रतिभागियों द्वारा पुरस्कार ग्रहण – कुछ झलकियां

पुरस्कृत विजेताओं को बधाई

प्रतियोगिता	विजेताओं के नाम व पदनाम	स्थान
हिंदी कविता आवृत्ति	श्री दिलीप दास, उच्च श्रेणी लिपिक	प्रथम
	श्रीमती अनामिका भट्टाचार्य, प्रधान लिपिक	द्वितीय
	श्री सुकुमार भुईंया, सुरक्षा अधिकारी	तृतीय
हिंदी फोनेटिंग टाइपिंग	श्री प्रफुल्ल बारिक, सहायक निदेशक (पीएंडआर)	प्रथम
	श्रीमती जबा चट्टोपाध्याय, आशुलिपिक	द्वितीय
	श्रीमती अर्चना मंडल, वरि. टंकक	तृतीय
हिंदी शब्दावली व टिप्पणी लेखन	शेख सिकंदर बक्स, कनिष्ठ क्वार्टर निरीक्षक	प्रथम
	श्री सौमिक दे सरकार, उपनिदेशक (अनुसंधान)	द्वितीय
	सुश्री कोयेल महतो, कार्यपालक अभियंता	तृतीय
हिंदी आशु-वक्तृता	श्री विप्लव राय, उच्च श्रेणी लिपिक (प्रवरण)	प्रथम
	मह0 शाहनवाज, उच्च श्रेणी लिपिक	द्वितीय
	श्री सदानंद शुक्ल, लेखा अधिकारी	तृतीय
हिंदी सुलेख	श्री राजेन लामा, दरवान	प्रथम
	श्री रामबली प्रसाद राजभर, सी.बी. पोर्टर	द्वितीय
	श्री जुबैर आलम खान, प्रधान पिउन	तृतीय

सतर्कता संबंधित कुछ अनुभव

सुश्री मिताली घोष
उप श्रम सलाहकार व औद्योगिक संपर्क अधिकारी

लोक सेवकों को ईमानदार होना चाहिए और उनके काम-काज में नैतिकता भी प्रकट होने चाहिए। उन्हें पारदर्शी रूप से अपने कर्तव्यों का निर्वहन करना चाहिए ताकि सार्वजनिक संपत्ति और मामलों से निपटते समय, उनके कार्यों में कोई असतता की छाया या आरोप न लगे। देश के लोग यह उम्मीद रखते हैं कि लोक सेवक हर समय अपने कर्तव्य के प्रति पूर्ण निष्ठा और भक्ति बनाए रखेंगे और क्षमता का दुरुपयोग नहीं करेंगे।

और राज्य स्तर पर कई सतर्कता और भ्रष्टाचार-रोधी एजेंसियां हैं। भ्रष्ट को दंडित करने के लिए मजबूत कानून भी हैं। लोक प्राधिकारों में सतर्कता विभाग है, जो भ्रष्टाचार के खिलाफ जांच-पड़ताल और लोक सेवकों के भ्रष्ट और अनुचित तौर-तरीक़ों पर नजर रखते हैं। निगरानी और अभिज्ञान के साथ, सतर्कता विभागों को दंडात्मक और निवारक सतर्कता का काम भी सौंपा गया है। केंद्रीय सतर्कता आयोग की सतर्कता नियम पुस्तक या विजिलेंस मैनुअल में बताया गया है कि सतर्कता कार्यों का उद्देश्य संगठन में प्रबंधकीय क्षमता और प्रभावकारिता के स्तर को कम करना नहीं वरन उसे बढ़ाना है। अतः सतर्कता विभागों को जांच के अलावा संगठन की कार्य प्रणाली में सुधार और भ्रष्टाचार की घटनाओं की पुनरावृत्ति को रोकने के लिए, सुधारात्मक उपायों का सुझाव भी देना चाहिए। संगठन के अच्छे या सकारात्मक कार्य की सराहना भी सतर्कता विभाग का कर्तव्य है, क्योंकि सतर्कता का मतलब सिर्फ गलतियां ढूंढना नहीं है।

लोक प्राधिकारों के सतर्कता विभाग में नियुक्ति के लिए कोई निश्चित 'सतर्कता योग्यता' नहीं है। अधिकांश अधिकारी व कर्मचारी विभिन्न सेवा से आते हैं, जैसे कि मुख्य सतर्कता अधिकारी किसी प्रशासनिक या तकनीकी सेवा से और विभाग के अन्य अधिकारी वित्त या औद्योगिक संबंध या तकनीकी पृष्ठभूमि से हो सकते हैं। गोपनीयता बनाए रखने के लिए, सतर्कता विभाग हमेशा एक छोटा-सा सेट-अप होता है।

मुख्य सतर्कता अधिकारी और लगभग सभी सतर्कता अधिकारी व कर्मचारी को तीन से पांच साल की एक निश्चित अवधि के लिए नियुक्त किया जाता है। इस अवधि के भीतर ही उन्हें अपने पूर्ववर्तियों के कार्यों को पूरा करना व नए मामलों की जांच करना है। सतर्कता अधिकारी अपने तीन या पांच साल की छोटी-सी मियाद में ही विभिन्न विषय सीखते हैं। इसके जरिए ज्ञान का विस्तार होता है, और ये उनके आगे की सर्विस में काम आता है। एक सतर्कता जांच के माध्यम से काफी विषयों के अनुभव का लाभ होता है, यथा :

(क) **अचानक निरीक्षण का आयोजन (Surprise Checks)** - लोक सेवक अनुचित तौर-तरीके अपना रहें हैं या नहीं, यह पता लगाने के लिए संगठन के संवेदनशील कार्यस्थलों का अचानक निरीक्षण होता है। यह आमतौर पर एक जांच की भूमिका या शुरुआत है। उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि सतर्कता कर्मचारी यांत्रिक विभाग के गोदाम में आकस्मिक स्टॉक-चेक करने गए । वास्तव में, चंद घंटों के भीतर एक आकस्मिक निरीक्षण का संचालन, उस पर संक्षेप में, सभी तथ्यों से युक्त एक रिपोर्ट लिखना और उपस्थित सभी व्यक्तियों के हस्ताक्षर प्राप्त करना, सतर्कता कर्मियों की बुद्धिमत्ता, निपुणता और कूटनीति का परीक्षण है।

(ख) **आरंभिक जांच (Preliminary Investigation)** - एक आरंभिक सतर्कता जांच अक्सर अचानक निरीक्षण से शुरू होता है। उदाहरण के लिए, अचानक निरीक्षण के समय पता चल सकता है कि गोदाम में संग्रहीत उच्च मूल्य की बिजली के सामान में विसंगतियां हैं या सामान की सटीक सूची/इन्वेंट्री नहीं रखी गई है या नियमित रूप से जायजा (stock-taking) नहीं किया गया है। इन अनियमितताओं के कारणों का पता लगाने के लिए गहराई से जांच की आवश्यकता हो सकती है।

जांच पूरा होने के बाद जांच अधिकारी रिपोर्ट तैयार करता है। रिपोर्ट का उद्देश्य है प्रासंगिक तथ्यों को सामने लाना और अगर जांच के दौरान कोई अनियमितता पायी गई है तो उसके लिए जिम्मेदारी तय करना। कार्य प्रणाली में सुधार के उपाय पर सुझाव, जांच रिपोर्ट में उल्लेख किया जाना चाहिए।

(ग) **तकनीकी परीक्षण (Technical Examination)** - सतर्कता-कार्यकाल एक गैर-तकनीकी अधिकारी को तकनीकी परीक्षण टीम का हिस्सा बनने का मौका प्रदान करता है और कई तकनीकी विषयों में शिक्षित करता है। उदाहरण के लिए, संगठन में किया गया किसी भी सिविल इंजीनियरिंग काम का परीक्षण करना।

(घ) **अनुशासनिक कार्रवाई (Disciplinary Action)** - सतर्कता जांच भ्रष्टाचार का पता लगाती है और इसके बाद लोक सेवक के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाती है। इन मामलों से संबंधित कार्रवाई से सतर्कता अधिकारी नियमों व विनियमों, डीओपीटी (DoPT) परिपत्रों और दिशा निर्देशों, सरकारी कोड और मैनुअल के बारे में सीखते हैं। विभागीय जांच के दौरान एक सतर्कता अधिकारी को, अभियोजन पक्ष के लिए मामले को पेश करने के लिए, पेश अधिकारी (Presenting Officer) के रूप में नियुक्त किया जा सकता है या अभियोजन पक्ष के गवाह के रूप में भी बुलाया जा सकता है। इस कर्तव्य में बहुत सावधानी एवं निश्चयात्मक भूमिका निभानी चाहिए।

(ङ) **कानूनी दृष्टिकोण (Legal angles)** - लोक सेवकों के खिलाफ शुरू की गई अनुशासनात्मक कार्यवाही से अक्सर कोर्ट के मामले उत्पन्न होते हैं। अगर मुख्य सतर्कता अधिकारी को मामले का प्रतिवादी बनाया जाता है तो संगठन के कानूनी विभाग और वकीलों से, मामले पर विचार-विमर्श और टिप्पणियाँ तैयार कर, हलफनामा पेश करना पड़ता है। अगर सतर्कता अधिकारी ने एक भ्रष्टाचार की जांच करने के लिए बहुत मेहनत की है तो उससे उत्पन्न कानूनी कार्रवाई की ठीक से बचाव किया जाना चाहिए, अन्यथा पूरा प्रयास ध्वस्त हो सकता है। काफी कानूनी ज्ञान प्राप्त होता है और कानूनी उलझनों का डर गायब हो जाता है।

च) **आरटीआई (RTI)** - सूचना का अधिकार अधिनियम 2005, भारत के नागरिकों को लोक प्राधिकारियों के नियंत्रणाधीन सूचना तक पहुँच सुनिश्चित करता है। सतर्कता विभाग को भी अब अपने नियंत्रणाधीन दस्तावेजों का खुलासा करना पड़ता है, जिनसे विभाग के कामकाज और सोच प्रक्रियाओं का पता चलता है और वे विभिन्न मुद्दों पर जनता से जवाबदेह होते हैं। सतर्कता अधिकारी एवं केन्द्रीय लोक सूचना अधिकारी (CPIO) का कर्तव्य पालन करना सर्विस काल के सबसे अच्छे अनुभवों में से एक है । केन्द्रीय लोक सूचना अधिकारी का कर्तव्य है प्रत्येक सूचना आवेदक को सबसे सुविधाजनक रूप में प्रासंगिक जानकारी देना। सतर्कता विभाग के CPIO होने की संतुष्टि तब मिलती है जब आप आवेदकों को आरटीआई के तहत जानकारी प्रदान कर उनकी सूचना अभिप्राप्त करने के अनुरोध को पूरा करते हैं और साथ ही, सूचना का अधिकार अधिनियम के कुछ प्रावधानों के अनुसार संवेदनशील विषयों की गोपनीयता सुनिश्चित कर पाते हैं।

इस लेखिका की राय में, सतर्कता विभाग में कुछ अवधि बिताना सेवा काल का एक संतोषजनक अनुभव है। इससे प्रशासनिक कुशाग्रता बढ़ जाती है, काफी विषय सीखने का मौका मिलता है और भय अथवा पक्षपात के बिना काम करने की ताकत पैदा होती है।

इस लेख में व्यक्त विचार लेखिका के अपने हैं।

डेंगू ज्वर के संबंध में जानकारी

डॉ. कुंतल दास
वरि. चिकित्सा अधिकारी, चिकित्सा विभाग

डेंगू ज्वर मच्छर जनित उष्ण कटिबंध प्रदेशों की बीमारी है जो डेंगू वाइरस द्वारा होता है । संक्रमण के तीन से चौदह दिनों के बाद इसके लक्षणों को विशेष रूप से देखा जाता है । डेंगू वाइरस एडिस एजिप्टाई नामक मच्छरों के काटने से फैलता है । केवल मादा मच्छर ही डेंगू वाइरस फैलाता है। यह मच्छर घर के अन्दर अथवा बाहर दिन के समय काटता है और सूर्यास्त के पहले और सूर्योदय के बाद अधिक सक्रिय होता है।

एडिस एजिप्टाई मच्छर घर के अन्दर और बाहर पात्र में रखे हुए जल में पैदा होते हैं और अपने प्रजनन स्थल से 200 मीटर से अधिक दूर प्रायः नहीं जाते हैं। ये क्रिक (संकड़ी खाड़ी), दलदल, तालाब अथवा अन्य जलाशयों में प्रजनन नहीं करते।

पहचान और लक्षणः

- 3 से 7 दिनों तक ज्वर
- तीव्र सिरदर्द और आंखों के पीछे दर्द
- माँसपेशियों और जोड़ों में दर्द
- भूख की कमी
- उल्टी और डायरिया
- चमड़े पर चकत्ता पड़ना
- साधारणतया नाक और मसूड़ों से रक्त बहना।

कभी-कभी लंबी थकान और अवसाद के बाद स्वास्थ्य लाभ होता है। डेंगू का बार-बार होना अत्यधिक रक्त-स्राव और सदमा दे सकता है, किंतु सटीक उपचार से यह घातक नहीं हो पाता।

रोग निदानः डेंगू का उपचार अभिलक्षणों के आधार पर क्लिनिकली किया जाता है जो लक्षणों और शारीरिक परीक्षा पर निर्भर होता है। लेबोरेटरी जांच में जो प्रारंभिक परिवर्तन पाया जाता है वह है सफेद रक्त कोशिकाओं की संख्या में कमी होना, इसके बाद प्लेटलेट्स की कमी होना।

NS1 एन्टीजेन और IgM एन्टीबॉडी प्रत्येक दूसरे दिन लगातार प्लेटलेट्स की गणना की जाती है।

उपचारः डेंगू ज्वर की कोई निर्धारित उपचार नहीं है। बेड रेस्ट और एसिटामाइनोफेन (पैरासिटामल) ज्वर और दर्द उपचार के लिए दी जाती है। अधिक मात्रा में तरल का सेवन आवश्यक है।

एस्पीरीन और NSAIDS (इबूप्रोफेन, नैप्रोक्सेन) बिल्कुल नहीं दी जा सकती हैं क्योंकि इनसे रक्त स्राव की समस्या जटिल हो सकती है। यदि प्लाज्मा की गिनती 20,000 से कम हो जाती है तो नये प्लाज्मा दिए जाते हैं। अभी डेंगू ज्वर के लिए कोई टीका उपलब्ध नहीं है।

बीमारी से निजात पाने के लिए व्यक्तिगत सुरक्षा और मच्छरों से बचाव के लिए पर्यावरण प्रबंधन आवश्यक है। ज्वर से संक्रमित व्यक्ति को मच्छरों से दूर रखना जरूरी है।

जरा हँस लें

अमित कुमार दास
सुपुत्र श्री विश्वेश्वर कुमार दास, यूडीसी, चिकित्सा विभाग

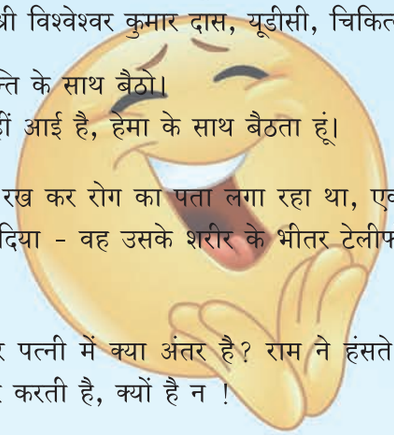

मास्टर साहब - दीपक, चुपचाप शान्ति के साथ बैठो।
दीपक - मास्टर जी, आज शान्ति नहीं आई है, हेमा के साथ बैठता हूं।

डाक्टर रोगी के छाती पर स्टेथेस्कोप रख कर रोग का पता लगा रहा था, एक बालक ने अपनी मां से पूछा - डॉक्टर साहब क्या कर रहे हैं? माँ ने उत्तर दिया - वह उसके शरीर के भीतर टेलीफोन करके पूछ रहे हैं कि अन्दर क्या-क्या रोग है।

रामू ने राम से पूछा - रेलगाड़ी और पत्नी में क्या अंतर है? राम ने हंसते हुए कहा - रेलगाड़ी देर करके मेकअप करती है और पत्नी मेकअप करके देर करती है, क्यों है न !

लघु कहानियां

नफरत का बोझ

श्रीमती पूनम उपाध्याय
धर्मपत्नी श्री सत्येंद्र नाथ उपाध्याय, यूडीसी, सीएमई विभाग

एक बार एक महात्मा ने अपने शिष्यों से अनुरोध किया कि वे कल से प्रवचन में आते समय अपने साथ एक थैली में बड़े आलू साथ लेकर आए, उन आलूओं पर उस व्यक्ति का नाम लिखा होना चाहिए जिनसे वे ईर्ष्या करते हैं। जो व्यक्ति जितने व्यक्तियों से घृणा करता हो, वह उतने आलू लेकर आए।

अगले दिन सभी लोग आलू लेकर आए, किसी के पास चार आलू थे, किसी के पास छः या आठ और प्रत्येक आलू पर उस व्यक्ति का नाम लिखा था जिससे वे नफरत करते थे।

अब महात्मा जी ने कहा कि, अगले सात दिनों तक ये आलू आप सदैव अपने साथ रखें, जहां भी जायें, खाते-पीते, सोते-जागते, ये आलू आप सदैव अपने साथ रखें। शिष्यों को कुछ समझ में नहीं आया कि महात्मा जी क्या चाहते हैं, लेकिन महात्मा के आदेश का पालन उन्होंने अक्षरशः किया। दो-तीन दिनों के बाद ही शिष्यों ने आपस में एक दूसरे से शिकायत करना शुरू किया, जिनके आलू ज्यादा थे, वे बड़े कष्ट में थे। जैसे-तैसे उन्होंने सात दिन बिताए और शिष्यों ने महात्मा की शरण लीं। महात्मा ने कहा, अब अपने-अपने आलू की थैलियां निकालकर रख दें, शिष्यों ने चैन की सांस ली ।

महात्मा जी ने पूछा - विगत सात दिनों का अनुभव कैसा रहा? शिष्यों ने महात्मा से अपनी आप-बीती सुनाई, अपने कष्टों का विवरण दिया, आलुओं की बदबू से होने वाली परेशानी के बारे में बताया, सभी ने कहा कि बड़ा हल्का महसूस हो रहा है। महात्मा ने कहा - यह अनुभव मैंने आपको एक शिक्षा देने के लिये किया था ....

जब मात्र सात दिनों में ही आपको ये आलू बोझ लगने लगा, तब सोचिए कि आप जिन व्यक्तियों से ईर्ष्या या नफरत करते हैं, उनका कितना बोझ आपके मन पर होता होगा और वह बोझ आप लोग तमाम जिन्दगी ढोते रहते हैं, सोचिए कि आपके मन और दिमाग की इस ईर्ष्या के बोझ से क्या हालत होती होगी? यह ईर्ष्या आपके मन पर अनावश्यक बोझ डालती है, उनके कारण आपके मन में भी बदबू भर जाती है, ठीक उन आलुओं की तरह... इसलिये अपने मन से इन भावनाओं को निकाल दें।

माँ

विदिशा उपाध्याय
सुपुत्री श्री सत्येंद्र नाथ उपाध्याय, यूडीसी, सीएमई विभाग

मॉ शब्द सुन कर ही एक अजीब सा सुखद एहसास होने लगता है। मां शायद जिसके पास नहीं है, वह इसकी अहमियत को ज्यादा समझ पाता है। मां के बिना घर, परिवार, बच्चे सब कुछ बिखर जाता है। उन बच्चों की दुनिया ही उजड़ जाती है जिनके बचपन से ही मां का प्यार छीन जाता है। मां एक छाया है, जो बच्चों के साथ हर समय खड़ी रहना चाहती है। माँ कभी अपने बच्चों का साथ नहीं छोड़ सकती चाहे परिस्थिति कैसी भी हो।

मुझे तो ऐसा लगता है कि शायद उनके पास कभी दुःख आये ही न जिनके पास मां है। मां अपने बच्चों के लिए हर दुःख से लड़ने को तैयार रहती हैं और मां की शिक्षा ही बच्चों की प्रथम पाठशाला होती है। मां के लिए जितना भी कहा जाए कम है। क्योंकि शब्द पर्याप्त नहीं है जो मां का आभार प्रकट कर सके। लेकिन, मां जहां भी रहें जिस दुनिया में रहें, वह अपने बच्चों को आशीर्वाद देती रहती है।

कविताएं

प्यार का शहर

यह कैसे लोग हैं, जो ढाते है कहर।
इंसानियत बदनाम करते आठों पहर।।

खूनी दरिंदे, मचाते बेकार जुल्म की गदर।
21वीं सदी का, यह रूप क्रूर व बर्बर।।

तड़पते इन्सान, हा-हाकार मचाते शैतान।
मीठी दुनिया में घुलता, जहर ही जहर।।

छटपटाता बैठा, गगन की मूंडेर पर।
देख जंग-ए-हालात, रोता खून की नजर।।

चारों ओर लहू ही लहू, बहता बेमानी।
वीरान हो रहा, वो प्यार का शहर।।

एमानुएल सिंह
भंडार/क्रय अधिकारी
सामग्री प्रबंधन प्रभाग

नव संदेश

भारत के कोने-कोने से,
हम सब बच्चे आए हैं।
नई उमंग और आशाओं का,
नव संदेशा लाए हैं।
हिम गिरि की ऊँचाई लाए,
सागर की गहराई।
हम पूरब से लेकर आए,
प्रातः किरण की अरूणाई।
कल आने वाली दुनिया में,
कुछ करके हम दिखलाएंगे।
भारत के ऊँचे माथे को,
हम उँचा और उठाएंगे।

भानुप्रिया दास
सुपुत्री श्री विश्वश्वर कुमार दास
यूडीसी, चिकित्सा विभाग

प्रिया-दर्शन

श्यामल नयना, रंग श्वेत,
जिया न भरे बार-बार देख।
मारे शर्म झुक जाय अंखियां,
चाहकर न कर पाय बतियां।
बन्द ओठ अर्ध खुली अंखियां,
बता जाय दिल की सारी बतियां।

अंखियों से अंखियां मिली,
दिल की कलियां खिल उठी।
बंद ओठ मुस्कान उठी,
कोमल गलों में जा छिपी।
यह मीठी आधी मुस्कान,
कर गई प्रिय का मुश्किल आसान।

जय प्रकाश कुमार कोहार
विभागः यातायात

जीवन

जीवन क्या है?
सुख-दुःख का संगम है।
पतझड़ और हरियाली का मौसम है।

जीवन क्या है?
अच्छे-बुरे पल का उतार-चढ़ाव है।
अपने परायों की पहचान है।

जीवन के हैं रंग अनेक,
दिखाती हैं यह रूप अनेक,
कभी लगे बसंत हैं ये,
कभी लगे पतझड़ हैं ये,

जीवन है यह जीवन है -
मुस्कुराते हुए आगे बढ़ो।
जीवन का गीत गाते चलो।
अपना कर्म करते चलो।
मानवता का पाठ पढ़ाते चलो।

ज्योतृष्णा कुमारी
सुपुत्री श्री जयप्रकाश कुमार कोहार
यातायात विभाग

अंग्रेजी में प्रयुक्त विदेशी अभिव्यक्तियां और उनके हिन्दी पर्याय :

ab initio	:	आदित:, आरंभ से	i.e. (id est)	:	अर्थात
above par	:	औसत से ऊंचा, अधिमूल्य पर	intra vires	:	शक्ति के अधीन, प्राधिकार के अधीन
ad certum diem	:	निश्चित दिन			
ad hoc	:	तदर्थ	in-toto	:	संपूर्णत:/पूरी तरह से
ad infinitum	:	निरवधि	ipso jure	:	विधित:
ad interim	:	अन्त:कालीन	in camera	:	बंद कमरे में
ad Valorem (Excise)	:	मूल्यानुसार	inter se	:	आपस में
at par	:	सम मूल्य पर	locus standi	:	सुने जाने का अधिकार
bona fide	:	1. सद्भाव से, सद्भाव पूर्वक,	modus operandi	:	कार्यप्रणाली
	:	2. सद्भाविक, सद्भावपूर्ण	mutatis mutandis	:	यथावश्यक परिवर्तन सहित
	:	3. वास्तविक, वास्तव में, यथार्थ	nexus	:	संबंध
carte blanche	:	कोरा पत्र, पूर्णाधिकार पत्र	onus probandi	:	साबित करने का भार
contra	:	के विरूद्ध	per annum	:	प्रतिवर्ष
data	:	आधार तथ्य	per capita	:	व्यक्ति वार
de facto	:	वस्तुत:	per diem	:	प्रतिदिन
de jure	:	विधित:	per mensem	:	मासिक, प्रतिमास
de novo	:	नए सिरे से	persona grata	:	ग्राह्य व्यक्ति
divorce a mensa et thoro	:	सहवास विच्छेद	persona non grata	:	अग्राह्य व्यक्ति
ex-gratia (Payment)	:	अनुग्रह पूर्वक (अदायगी)	post mortem	:	1. मृत्यु के बाद
ex-officio	:	पदेन		:	2. मरणोत्तर परीक्षा
ex-parte	:	एक पक्षीय	prima facie	:	प्रथमदृष्ट्या
ex-post facto (sanction)	:	कार्योतर (मंजूरी)	pro bono publico	:	जनहित में, लोक हित में
fait accompli	:	सम्पन्न कार्य	pro rata	:	अनुपातत:
habeas corpus	:	बंदी प्रत्यक्षीकरण	proximo	:	आगामी मास का
ibid (ibidim)	:	तत्रैव/वही	sin qua non	:	अनिवार्य शर्त, अपरिहार्य शर्त
in esse	:	आस्तित्वशील, आस्तित्वयुक्त	sub judice	:	न्यायाधीन
in limine	:	आरम्भ में ही	suo moto	:	स्वप्रेरणा से
in loco perentis	:	माता पिता के स्थान में	ultra vires	:	अधिकारातीत
in memorium	:	स्मृति में, याद में	vires	:	शक्तिमत्ता
inter alia	:	अन्य बातों के साथ-साथ			

कुछ अन्य गतिविधियां

गणतंत्र दिवस 2017 परेड के दौरान उपाध्यक्ष श्री एस बालाजी अरुणकुमार, राष्ट्रीय ध्वज को सलामी देते हुए

चेन्नई (14-16 फरवरी '17) अखिल भारतीय पत्तन टेबुल टेनिस टूर्नामेंट में कोलकाता पत्तन के श्री सौमिक दे सरकार, उपनिदेशक (अनुसन्धान) ने स्वर्ण पदक जीता

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में पुरस्कार व प्रशस्ति पत्र ग्रहण करती हुईं सुश्री मिताली घोष, कार्मिक अधिकारी/उप एलए एंड आईआरओ

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर पत्तन में वृक्षारोपण करते हुए पत्तन के उपाध्यक्ष श्री एस बालाजी अरुणकुमार

विदाई

श्री ए. वी. रमणा

आपने कोलकाता पत्तन न्यास के यांत्रिक व विद्युत विभाग के विभागाध्यक्ष पद से दिनांक 6 अगस्त 2016 को विदा लेते हुए कोचिन पत्तन न्यास के उपाध्यक्ष का कार्यभार ग्रहण किया। पत्तन-परिवार की ओर से आपको बहुत-बहुत बधाई।

श्री सुभाशीष बागची

कोलकाता पत्तन न्यास के वित्त सहालकार एवं मुख्य लेखाधिकारी के पद से दिनांक 8 सितंबर, 2016 को सेवानिवृत हुए। पत्तन-परिवार आपके सुखद व आरोग्य अवसर-जीवन की कामना करता है।

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

मंत्रिमंडल सचिवालय लोक शिकायत निदेशालय

क्या आप अनसुलझी शिकायतों से परेशान हैं?

आप लोक शिकायत निदेशालय के कार्य क्षेत्र के अंतर्गत मंत्रालयों/विभागों और संगठनों से संबंधित शिकायतों के समाधान के लिए लोक शिकायत निदेशालय की सहायता ले सकते हैं।

पिछले कुछ सालों में, इस निदेशालय द्वारा उठाई गई लगभग नब्बे प्रतिशत शिकायतों का संतोषजनक समाधान किया गया है।

अपनी शिकायत दर्ज कराने से पहले कृपया नीचे दी गई शर्तों को ध्यानपूर्वक पढ़ें :-

- आपकी शिकायत सेवा मामले (ग्रेच्युटी, जीपीएफ इत्यादि जैसे सेवांत हितलाभों के भुगतान के अलावा), संबंधित विभाग के मंत्री के स्तर पर निपटाए गए मामले, वाणिज्यिक अनुबंध, न्यायाधीन मामले, ऐसे मामले जहां निर्णय लेने के लिए अर्द्धन्यायिक पद्धति और अपीलीय प्रक्रियाएं निर्धारित की गई हैं, आरटीआई मामले, धार्मिक मामले से संबंधित न हो।
- किसी भी प्रकार के सुझाव को शिकायत के रूप में नहीं माना जाएगा।

लोक शिकायत निदेशालय के कार्यक्षेत्र के अंतर्गत आने वाले मंत्रालयों/विभागों/संगठनों की सूची

(क) रेल मंत्रालय	(ञ) वित्त मंत्रालय की राष्ट्रीय बचत स्कीम
(ख) डाक विभाग	(ट) श्रम और रोजगार मंत्रालय के अंतर्गत कर्मचारी राज्य बीमा निगम नियंत्रित ईएसआई अस्पताल और औषधालय।
(ग) बीएसएनएल और एमटीएनएल सहित दूर संचार विभाग	(ठ) कर्मचारी भविष्य निधि संगठन।
(घ) दिल्ली विकास प्राधिकरण, भूमि और विकास कार्यालय, सीपीडब्यूडी और सम्पदा निदेशालय सहित शहरी विकास मंत्रालय।	(ड) विदेश मंत्रालय के अंतर्गत क्षेत्रीय पासपोर्ट प्राधिकरण
(ड.) पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय, इसके सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम सहित।	(ढ) स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के अंतर्गत केंद्रीय सरकार स्वास्थ्य योजना
(च) भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण और एअर इंडिया सहित नागर विमानन मंत्रालय।	(ण) पर्यटन मंत्रालय
(छ) केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, केंद्रीय विद्यालय संगठन, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयीय संस्थान, नवोदय विद्यालय समिति, केंद्रीय विश्वविद्यालय समविश्वविद्यालय (केंद्रीय) और मानव संसाधन विकास मंत्रालय की छात्रवृत्ति स्कीमें।	(त) युवक कार्यक्रम मंत्रालय
(ज) सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक	(थ) पोत परिवहन, सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय
(झ) सार्वजनिक क्षेत्र की बीमा कंपनियां	

नोट : आप हमारी वेबसाइट **http://dpg.gov.in** पर अपनी शिकायत ऑनलाइन दर्ज कर सकते हैं।
आप अपनी शिकायत, संपूर्ण सूचना और संगत दस्तावेजों के साथ हमें डाक/फैक्स या ईमेल कर सकते हैं।

हमसे यहां संपर्क करें :-

सचिव, लोक शिकायत निदेशालय, दूसरा तल, सरदार पटेल भवन, संसद मार्ग, नई दिल्ली-110001

दूरभाष : 011-23743139, 011-23741228, 011-23363733

Adunique